..... अभी बाबा ने बैठ करके सब अच्छी तरह से समझाया है और अभी नशा तो चढ़ा हुआ है। सारी दुनिया में जितना नशा ब्रह्माकुमार और कुमारियों को है ऐसा दूसरा कोई मनुष्य मात्र को हो नहीं सकता है। ज़रूर ब्रह्माकुमार–कुमारियों को होगा तो ब्रह्मा को भी होगा। ये क्रिश्चियन लोग की कितनी लड़ाई लगी ! कितना इनवेड किया! चाइना (ने) जापान को जीता था? कभी अमेरिका का राज्य था? इन्हों की इनवेड जास्ती हुई है। इन्होंने बहुत इलाके (के) ऊपर राज्य किया है। लड़ाइयों (में) कितने मरे होंगे, कितने नुकसान हुए होंगे। अभी तुम बाबा की मत पर ; या बाप कहते हैं या बाबा कहते हैं। बाप कहेगा मत पर और बाबा भी कहेगा मत पर, श्रीमत पर तुम इस सारी विश्व के ऊपर गुप्त इनवेड कर रहे हो। देखो, किसको पता पड़ता है ? कोई लड़ाई, कोई झगड़ा, कोई मारा–मारी ? सिर्फ तुम जानते हो कि हम सारी दुनिया के मालिक बनते हैं; क्योंकि बाप का बनते हैं और बाप की मत पर चलते हैं। ये जानते हैं कि बरोबर हमारे को बाबा से विश्व की बादशाही मिलती है अगर हम उनकी श्रीमत पर चलेंगे और फॉलो मदर–फादर करेंगे; क्योंकि वो सिखलाने वाला है। जो सीखने में तीखा जाता है उनके पिछाड़ी फॉलो करना पड़ता है। फॉलो करने से...। अभी फॉलो क्या करना है? याद में रहना है और बाप का परिचय देना है। याद में रहना है और वर्से को भी याद में रखना है। जब बाप से योग है तो वर्सा ज़रूर बुद्धि में आएगा। तो देखो, ये गाया भी हुआ है कि एक सेकेण्ड में विश्व पर बादशाही। बरोबर विश्व का रचता है बाप फिर हम उनका बनेंगे तो ज़रूर हमको सिर्फ लायक बनना होता है। अभी बाप कहते हैं तुम नालायक, छी–2, मूत–पलीती हो पड़े हो; इसलिए तुम लायक नहीं हो। फिर से लायक बन रहे हैं और सच बनते ही हैं याद से। और तो कोई तकलीफ नहीं, कोई स्नान... देखो, ठण्डी में वहाँ कितना जाते हैं! हमेशा युक्ति रचनी होती है रात–दिन, विचार–सागर–मंथन करना होता है (कि) किस युक्ति से हम सहज रीति से बहुतों को आप समान बनावें। अभी ये भी आते हैं, ये झाड़ कोई झट से नहीं बढ़ेगा। झाड़ का लॉ है– दो से चार, चार से आठ, आठ से सोलह। ऐसे हो नहीं सकता है कि झाड़ छह से एकदम पच्चीस बन जावें, पत्ते निकल पड़ें। ऐसे नहीं हो सकता है। हम कोशिश भी करते हैं कि हम बहुतों को आप समान बनावें; परन्तु नहीं, माया फट गिरा देती है, झट अच्छे–अच्छों को गिरा देती है। तो भी मेहनत बहुत करनी पड़ती है ना। तो दिन–प्रतिदिन ऐसे युक्ति निकालते जावें। ये प्रदर्शनी भी युक्ति है ना, प्रोजेक्टर भी युक्ति है। किसको–2 जाकर पकड़ें जो फिर मददगार बन जावे। अभी तो बड़े हाथ में नहीं आते हैं। सन्यासी भी हाथ में नहीं आते हैं। कोई छोटे–2 गरीब–2 का चलता रहता है। जब ये बहुत हो जाएँगे तभी फिर कोई न कोई बड़े भी आएँगे। फिर ये तो गाया हुआ है कि जब प्रभाव निकलेगा तो सभी को मालूम पड़ जाएगा कि ये प्रभु की लीला कैसे रची हुई है और वो भी कोई जास्ती तो नहीं है। लीला कैसे रची हुई है ? अनादि, बनी–बनाई। इसमें कोई मोक्ष को पा नहीं सकेंगे; क्योंकि ऐसे बहुत ढेर हैं जो समझते हैं कि मोक्ष भी मिलता है यानी हम जो आत्माएँ हैं सो परमात्मा हो जाएगा। परमात्मा में भी क्या है? ब्रह्म है, सो ब्रह्म में हम ब्रह्म हो जाएंगे। ब्रह्म में ब्रह्म, ब्रह्म में लीन हो जाएंगे। और क्या हो जाएंगे? उनको तो भिन्न–2 मते हैं ना। अनेक अथाह मते हैं। किसी से पूछो क्या बकता है, किसी से पूछो क्या बकता है...। अनेक मत। यहाँ है एक मत। सिर्फ बिल्कुल सिम्पल बाप कहे– मामेकम् याद करो। याद की यात्रा में रहो और बीज और झाड़ का ज्ञान बिल्कुल सिम्पल गाया भी हुआ है। ड्रामा का भी गाया हुआ है। सिर्फ उन्होंने ड्रामा को लम्बा–चौड़ा रख दिया है, उसमें ये सारी खिटपिट हो गई है। ...तो विचार करते रहना चाहिए कि कैसे किसको अच्छी तरह से समझाएँ। बाप भी आगे नित्यप्रति देता ही रहेगा, सब नहीं समझा दिया है। कुछ ज़रूर समझाना रहा हुआ है जो समझाते रहते हैं। घरवालों को भला ये तो समझाओ कि दो बाप तो हैं ना, जो आधाकल्प उनको याद करते हैं। ज़रूर जिसको याद किया जाता है वो मिलेंगे तो ज़रूर ना। फिर जिसको इतना याद करते हैं उससे कुछ मिलने का भी तो होगा ना। बरोबर कहते भी हैं– दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अच्छा, दुःख आधाकल्प है, ये कोई को भी पता नहीं है। ये तुम बच्चों को अभी ध्यान में है कि ये जो रावण रूपी माया पाँच विकार है ये द्वापर से शुरू होती है और ये देवताएँ वाम मार्ग में जाते हैं। अभी देवताएँ वाम मार्ग में जाते हैं ये भी इन लोगों को मालूम है; क्योंकि पुरी में मंदिर बनाया हुआ है और गाया भी जाता है कि देवताएँ वाममार्ग में गए यानी पतित बने। ये भी तो ज़रूर होगा ना। अच्छा, फिर उनको ये ख्याल में

नहीं आता है (कि) जो पावन बने हैं वही पतित होते हैं। यह फिर उनके ध्यान में नहीं आता है; परन्तु इसकी निशानियाँ बहुत हैं जो देवताओं को दिखलाते हैं कि.. वाममार्ग में जाते हैं। फिर भी कुछ भी समझ में नहीं आता है और यहाँ बाप आ करके फिर...। बातें हैं, प्रायः कुछ न कुछ समझानी है ; परन्तु वो तो बहुत थोड़ी हुई ना। देखो, प्रायः कहा जाता है कि देवी–देवताओं का राज्य था। तो फिर देवी–देवताओं का राज्य आना चाहिए ना। आज कौन–सी अख़बार पढ़ी थी? ..... ये अख़बार में कुछ पड़ा हुआ था। वो पढ़ने लायक थी कि कितने मूँझे हुए हैं बिल्कुल ही। मैं समझता हूँ रामायण की भी बात पड़ी हुई थी, जो अंग्रेजी में कोई ने छापा है। उनमें भी ये चरिये–खरिये बहुत। तो बहुतों का माथा खराब हुआ पड़ा है। इसलिए मेहनत जास्ती करनी पड़ती है। एक को समझा देते हो, दूसरा उनको मिलेंगे वो उड़ा देती है। वो क्या–2 युक्ति रचना चाहिए। नहीं तो है बहुत सिम्पल। बाबा कहते हैं ये त्रिमूर्ति है ना बस, जो लॉकेट है या कोई भी है जिसके ऊपर लिखा हुआ है। यह त्रिमूर्ति भी कोई को सामने करें तो ज्ञान बिल्कुल ठीक है और गोला का तो बाजू में है। वो तो बिल्कुल ही सिम्पल है– स्थापना स्वर्ग की। .....देखो– आधा दुनिया, ये आधा दुनिया। सो पुरानी हो जा करके नर्क बनती है। फिर देखो स्थापना करते हैं वो पुराने का ... हो जाता है। अभी यही तो कॉमन बात है। झाड़ है, जड़जड़ीभूत होगा, फिर से रिपीट करेंगे। नई दुनिया सो पुरानी बनती है। पुरानी के पीछे ज़रूर नई बनती है। नई दुनिया तो ज़रूर आएगी। अभी लड़ाई वगैरह का आसार है ना। तो मनुष्यों को कुछ न कुछ समझ में आता है, जबकि तुम समझाते हो, नहीं तो कुछ भी नहीं समझते हैं। तो युक्तियाँ बहुत रचनी चाहिए। बाबा जैसे समझाते हैं ऐसे फर्स्टक्लास चित्र...। देखो, चित्र एक मास में फर्स्टक्लास बन सकते हैं अगर कोई बनाने वाला सेन्सीबुल हो और सर्विस का ही शौक हो तो। तो ये जो हैं, जाकर गवर्मेन्ट हाउस में या कोई न कोई बड़ी जगह में जहाँ आवत–जावत बहुत है, वहाँ जा करके समझाकर रख देना है। तो बहुत पढ़ें। बाबा कहते हैं ना कि दिल्ली में ऐसी कोई जगह ढूँढ़ों जो कोई ये खराब न करे। अगर तुम ये चित्र रखो तो बहुत ढेर के ढेर आ करके देखें और पढ़ें। कहाँ तक (और) कितने आएँगे तुम्हारे पास ? यहाँ ये प्रदर्शनी में भी थोड़ा टाइम आते हैं। ...ये तो कोई बैठ करके पढ़ तो सकते हैं ना। बहुत टाइम पढ़ सकते हैं। तो ऐसे वहाँ जाँच करनी चाहिए। तुम मत दो। ...सभी बाबा तो नहीं समझाएँगे ना। बच्चों की भी कुछ तो मत चमकेगी ना। कुछ तो राय निकालेंगे। निकाल भी रहे तो हैं ना। तो ऐसी राय निकालनी चाहिए जो जल्दी–2 बच्चों का कल्याण हो। वो भी जानते हैं कि ड्रामा अनुसार जो कल्याण कल्प पहले हुआ है, जिन–2 का हुआ है वो सभी वही होगा और कोई फर्क पल का भी नहीं है। सेकेण्ड ब सेकेण्ड जो हम एक्ट भी करते हैं वो जैसे कि ड्रामा अनुसार करते हैं। उनसे कमती–जास्ती होने का है नहीं। तो भी पुरुषार्थ ज़रूर करना पड़ता है। अपने कल्याण के लिए, औरों के कल्याण के लिए बहुत ज़रूरी है। तो ये चित्र जो बाबा ने बच्चों के लिए बनवाए हैं ; नए बच्चों के लिए तो चित्र ही चाहिए ना। तो ये चित्र बहुत चाहिए और ऐसी–2 जगह में रखना चाहिए, दे देना चाहिए। बड़ी यूनिवर्सिटी में ले जाकर रखना चाहिए। जो बड़ी यूनिवर्सिटी, जो बड़े इम्तहान पास करते हैं, पढ़ते हैं, तो भी हम दे सकते हैं। बड़ी यूनिवर्सिटी में समझा करके, जहाँ बहुत मनुष्य देखने के लिए भी जाते हैं। यूनिवर्सिटियाँ देखने लिए भी जाते हैं। ऐसे नहीं है कि नहीं जाते हैं। जैसे टैगोर है, उनके पास भी बहुत जाते हैं समझ करके। तो उनके पास भी जा करके...। सिर्फ एक ब्रह्मा का चित्र है, जो ही सबके उनमें खिटखिट करता है, और तो कुछ नहीं है। अभी वो चाहिए तो ज़रूर, उनके बिगर तो कुछ काम नहीं चले। इसके लिए तो बहुत ही झगड़ा होता है, बहुत खिटखिट होती है। पर क्या करें ? कौन सा ब्रह्मा? ब्रह्मा किसको रखें? ब्रह्माकुमारियाँ तो बहुत हैं। तो क्या वहाँ सूक्ष्मवतन में तो नीचे नहीं गिर पड़ी ना! जैसे नाटकों में दिखलाते हैं (कि) विष्णु भी ऊपर से उतरते हैं, फलाना भी ऊपर से उतरते हैं। ऐसे तो नहीं उतरे ना। तो चित्र बिगर तो काम नहीं चले। बाबा ने लक्ष्मी–नारायण और राधे–कृष्ण का चित्र निकाल भी दिया था । फिर भी बाबा को ठीक नहीं लगा। त्रिमूर्ति तो ज़रूर चाहिए ना। सिर्फ शिव के नीचे सो भी तो रख नहीं सकते हैं। शिव के नीचे लक्ष्मी–नारायण कैसे? इन्होंने वर्सा कैसे पाया? सिवाय ब्रह्मा के स्थापना तो कुछ काम नहीं चले। तो फिर डरना नहीं पड़ता है। इशारे में कुछ समझाने की कोशिश करनी चाहिए। अभी जैसे राधा आया तो उनको अच्छी तरह समझाकर बोलो– ये समझानी तो ठीक है ना। सबके लिए ही चाहिए ना। तुम्हारे मठ में तो बहुत आते हैं। क्यों न वहाँ भी ये चित्र

हम दे देवें या क्यों न हम आ करके गीता के ऊपर समझावें! अभी गीता के ऊपर तो उन सबको पकड़ना है। वो आया जो भले, उन सन्यासी को तुम लोगों ने ये बात ध्यान में नहीं बिठाई कि गीता का सरमोनाइज़र(उपदेशक) शिव (है)। वो बात वो समझे भी नहीं और बात नहीं निकली जैसे कि। बड़ी ते बड़ी लम्बी–चौड़ी बात– हाँ अच्छा है, ये पवित्रता रह करके। ये तो बहुत ऊँची अवस्था है, (ये) कहते हैं। बाकी वो नहीं समझते हैं कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं सो बिल्कुल राँग कर रहे हैं। गीता खण्डन तो सभी खण्डन। वो बातें उनकी बुद्धि में नहीं बैठीं। जैसे जगदीश ने लिखा था हमको .....मिली, वो बहुत प्रभावित हुआ। धूल भी प्रभावित (नहीं हुआ)। ..... तो मैं फट से लिख देता हूँ– तुमने कुछ भी नहीं समझाया। उसने तुमको और ही अपना चेला बना दिया। यानी ऐसा आवे जो लिखकर तो देवे कि ये बरोबर राँग है। बाकी किया कुछ भी नहीं, आया तो उनका प्रभाव तो हो गया कि भई फलाना–टीरा। बाबा को यह सर्विस कोई दिल पर थोड़े ही लगती है। ..ये गपोड़े लगा देते हैं। थोड़े में खुश हो जाते हैं, बस। .....फलाना आया, खुश हो गए। ऐसे अभी तलक ये बड़े कोई को भी किसी ने..... आकर जब वो न समझा है तब बाबा फिर समझते हैं ये बिचारा दिल को खुश किया, ब्रह्माकुमारी बहुत खुश हो गई क्योंकि आया (तो) थोड़ा प्रभाव हो गया। अभी महावीर हो, उनको ले करके फिरते रहते हैं। वो कुछ भी कर ही क्या सकेगा ? उनको कोई सुनेगा भी नहीं। वो फॉरेनर हैं। यहाँ अपने घर वालों को ही कोई को नहीं...। बड़े को समझाओ तभी...। ...जो राय देते रहते हैं ना महासभा वालों को या ऐसे–2 को... और चित्र बिगर कोई काम थोड़े ही चलता है। चित्र तो ज़रूर समझाना पड़े। सब समझाना बड़ा सहज होता है। नहीं तो कल्प को ही कितना उल्टा–सुल्टा कर देते हैं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी, 84 जन्म भी तो हम बता सकें ना। तो चित्र पर समझाना बहुत सहज है। तो चित्र बड़े–2 चाहिए, बड़ी–2 जगह में चाहिए। ...ये कौरव गवर्मेन्ट के तो दूसरे–2 धर्म वाले हैं। ये ब्राह्मण धर्म का तो गीता में कुछ पता भी नहीं है। ...जीतने वाले बच्चों ! क्यों? बाबा, क्या सोने का नहीं है? नहीं, अच्छी तरह से विचार करो, विचार–सागर–मंथन करो (कि) कैसे किसको अच्छी तरह से समझाया जाए। सर्विस मिल जाती है ना कोई (को) समझाने। 12:00, 1:00, 2:00 बज जावे तो भी तुम थक नहीं सकते हो। नींद आएगी नहीं। ये है एक ही पोत्रे। मुझे याद करने में सहज तुमको लगता होगा या इनको लगता होगा? तुम बताओ। क्योंकि इनको भी फिर याद करना है, पोत्रे–पौत्रियों को भी याद करना है। सहज किसको लगता होगा? ये बताओ। (किसी ने कहा– हमको) तुमको। तुम बोलो। ...हम फिर पूछेंगे। तुम बताओ। ... को सहज है डाडे को याद करना बजाय एक बाबा को, वो हाथ उठाओ या जो इनको .... एक/दो को देखो नहीं, विचार (चलाते रहो)। क्यों? मेरा तो बाबा है। ...मैं इतना याद नहीं कर सकता हूँ। (बच्चों ने कहा– बच्चों की सहज की बात है....) समझाते हैं ना– हाँ, ये है ठीक। बाबा खुद भी समझाते हैं कि आगे होने के कारण इनको सब तूफानों वगैरह–2 का बहुत अनुभव होना होता है। इसलिए ये तूफान रात–दिन ज़ोर से चलते रहते हैं कि इनको अनुभव हो, तो बच्चों को समझा सकें; क्योंकि बच्चे तो लिखते हैं– ये तूफान आया, ये तूफान आया, ये आया। बाबा! ये कभी नहीं आया। तो बाबा कहते हैं मैं बुड्ढा हूँ तो भी मुझे ऐसे–2 तूफान आते हैं जो वण्डर खाता हूँ कि जब मुझे ही इतने आते हैं तो पिछाड़ी में तो यहाँ से पास करेगा ना। तो ये बरोबर है (कि) बच्चों को सहज है। पौत्रे–पौत्रियों को सहज है। बाबा को डिफीकल्टी है। या वो खुद भी कहते हैं ना– बच्चे, ऐसे में हम कहता हूँ तुम सारा समय याद करके दिखलाओ। तो वो बोल देते हैं– बाबा, हम आधा समय, पौना समय 'तक' भी बोलते हैं। मैं तो बैठता हूँ, अभी दो मिनट भी नहीं याद कर सकता हूँ, भूल जाते हैं। ...क्योंकि ... को ये लगा रहता है ना– ये चित्र लाना है, ये करना है, ये करना है। इसमें शिवबाबा की तो याद ही नहीं रह सकती है। अच्छा! ऐसे मीठे–2, सिकीलधे, सर्विसेबल; क्योंकि बच्चे याद करते हैं तो भी बहुत शांति फैलाते हैं; क्योंकि शांति भी तो है ना। पवित्रता भी है तो शांति भी है। तो जितना–2 तुम याद करते हो इतना–2 बहुत गुप्त सर्विस करते हो। है तो सभी गुप्त। देखो, किसको मालूम थोड़े ही पड़ता है। तो हम ऐसे ही सीखते हैं, ऐसे ही गुप्त रीति से। नॉनवारियर्स, नॉनवायलेंस कोई तो होगा ना, जो नॉनवायलेन्स वाले और जीत पहनते होंगे। मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति याद–प्यार और गुडनाइट।